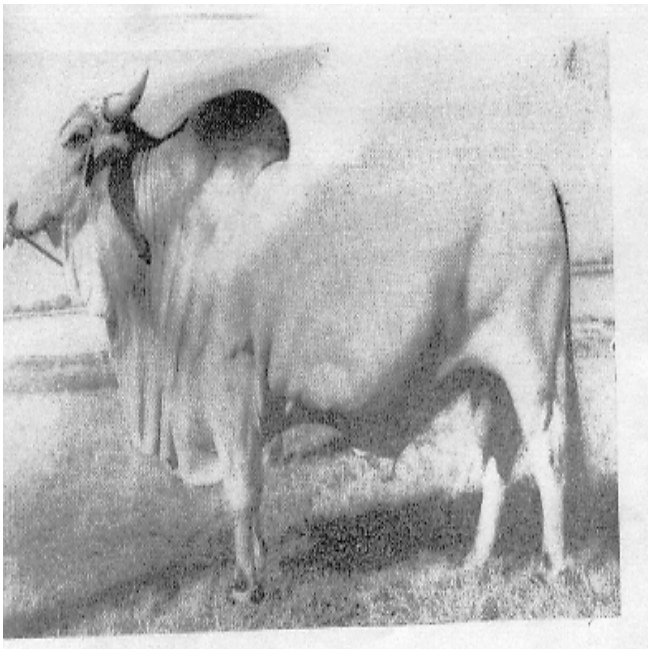

Plate 11. A male Tharparkar.

थारपारकर

सामुहिक गोबर गैस संयंत्र

वर्तमान में ब्राजील, चीन तथा भारत विश्व में कार्बन क्रेडिट के सबसे बड़े दावेदार हैं. भारत गोबर का उपयोग अधिकतम सामुहिक गोबर गैस संयंत्र से कर सकता है.

भारत के द्वारा 1000 करोड़ रु. कार्बन क्रेडिट से प्राप्त कर बहुत बड़ा उदाहरण विश्व के सामने प्रस्तुत किया है.

सामुहिक गोबर गैस संयंत्र के माध्यम से कार्बन क्रेडिट प्राप्त करना संभव है.

गुजरात में वातावरण के संतुलन को बनाये रखने के लिए तथा किसानों को गोबर गैस स्लरी उपलब्ध करवाने के लिए सामुहिक गोबर गैस संयंत्र स्थापित कर एशिया का ध्यान आकर्ीत किया है.

जैसलमेर में गुजरात की तरह ही सामुहिक गोबर गैस संयंत्र स्थापित करने पर थारपारकर नस्ल का विकास करना संभव है.

जैविक बोर्ड

श्री अशोक गहलौत मुख्यमंत्री राजस्थान के द्वारा थारपारकर, राठी, नागोर के संपूर्ण विकास करने के लिए विधानसभा में प्रस्ताव पारित कर जैविक बोर्ड का गठन करने की तुरन्त ही आवश्यकता है.

भारत में सिक्किम राज्य ने 2003 में सीरी नस्ल के संपूर्ण विकास करने के लिए सबसे पहले जैविक बोर्ड बनाकर 2015 तक जैविक राज्य बनने की तैयारियां पूरी कर ली है.

रासायनिक खाद तथा कीटनाशक के कारण भूमि बंजर होने के कारण अब जैविक बोर्ड विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय है.

नंदी पार्क

नंदी पार्क विश्व में बहुत ही अधिक सफल हैं. भारतीय नस्ल के नंदी विकसित करने के लिए विश्व में कई देशों जिनमें यूरोप, इजीप्ट यानी मिश्र, ओस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण आफ्रीका, दक्षिण अमेरिका यानी बाजील ने बहुत ही अच्छा कार्य किया है.

भारतीय नंदी के कारण ही उनके देशों की अर्थव्यवस्था बदल गयी है.

ब्राजील ने भारत से 6 गुना अधिक भूमि का उपयोग कर विश्व में भारतीय नंदी के विकास करने के लिए सबसे अधिक कार्य किया है.

विश्व में नस्ल सुधार करने के लिए भारतीय नंदी निर्यात कर ब्राजील ने बहुत अधिक धन प्राप्त किया है.

भारतीय नस्ल सुधारने के लिए श्रीमती दमयंती गोयल महापौर गाजियाबाद ने प्रतिदिन प्रति नंदी 5 गायों की नस्ल सुधारने के लिए पहल की.

60 एकड़ भूमि पर फेंसिग लगाकर 500 नंदी के साथ में उत्तरप्रदेश में सबसे पहले गाजियाबाद में नंदी पार्क नस्ल सुधार करने के लिए कार्य कर रहा है.

उसके बाद में राजधानी लखनउ में भी नंदी पार्क प्रारम्भ किया गया है.

जैसलमेर में नंदी पार्क 100 एकड़ भूमि पर फेंसिग लगाकर महापौर के द्वारा स्थापित करने की तुरन्त ही आवश्यकता है.

गो अभ्यारण

गो अभ्यारण विश्व में बहुत ही अधिक सफल है. गो अभ्यारण में भारतीय नस्ल के संपूर्ण विकास करने के लिए कई देश कार्य कर आज बहुत अधिक सम्पन्न हैं.

गो अभ्यारण 1500 एकड़ भूमि पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी के द्वारा जैसलमेर में प्रारम्भ करने की आवश्यकता है.

पहला गो अभ्यारण 2 करोड़ की लागत से 1350 एकड़ भूमि पर मध्यप्रदेश में श्री शिवराजसिंह चौहान मुख्यमंत्री के द्वारा प्रारम्भ किया गया है.

पंचगव्य डिप्लोमा

जैसलमेर में युवाओं को 30,000 रु. प्रतिमाह का स्वरोजगार देने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा पंचगव्य डिप्लोमा पाठयक्रम कम से कम 1 साल की अवधि के लिए प्रारम्भ करने की आवश्यकता है.

3 साल की अवधि के पाठयक्रम विश्व में युवाओं के बीच में बहुत ही सफल हैं.

1 जनवरी 2013 से 150 गोवंश के साथ में चेन्नई में पहला पंचगव्य डिप्लोमा 1 साल अवधि का श्री निरंजन वर्मा जी के द्वारा प्रारम्भ किया गया है.

पंचगव्य के महत्व को समझाने के लिए 1996 से पंचगव्य प्रशिक्षण 4 दिनों का निःशुल्क युवाओं को दिया जा रहा है.

थारपारकर कंजरवेशन ट्रस्ट

थारपारकर कंजरवेशन ट्रस्ट का गठन तुरन्त ही जैसलमेर में कर वेबसाइट, यू टयूब, ब्लोग, फेसबुक, टवीटर के माध्यम से थारपारकर के बारे में विश्व का ध्यान आकर्ीत कर नस्ल के संरक्षण करने की आवश्यकता है. वर्तमान में थारपारकर नस्ल 100 प्रतिशत शुद्ध बहुत ही कम हैं.

केरल में मात्र 135 संख्या वैचूर को बचाने के लिए वैचूर कंजरवेशन ट्रस्ट का गठन कर विश्व का ध्यान आकर्ीत किया गया है.

थारपारकर नस्ल सिंध के जिलों से ही प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1919 में पूर्वी सेना के केंप में दूध की मांग के कारण ही भारत में आयी है.

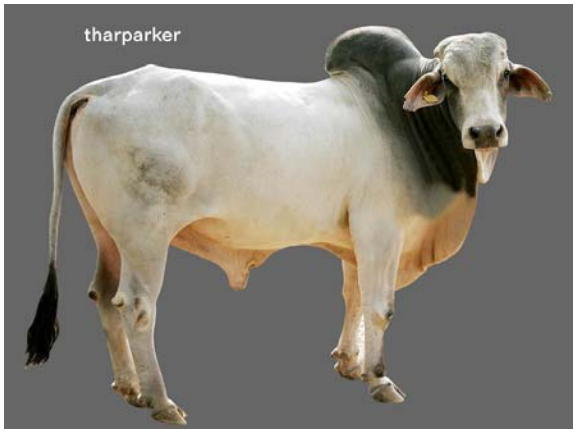

थारपारकर सांढ दूध बढ़ाने के लिए सर्वश्रे-ठ हैं.

लंबा चेहरा, चौड़ा मस्तक, उभरा हुआ ललाट होता है. मध्यम दर्जे के सींग जो सिर के बगल से निकल कर धीरे धीरे उपर व अंदर की ओर मुड़ते हैं. कान लंबे व लटकते हुए होते हैं.

मध्यम दर्जे का थुआ कंधे पर आगे आता हुआ होता है. गायों का अयन विकसित होता है. यह देह से सटा रहता है.

दुग्ध शिरायें अयन पर स्प-ट दिखाई देती हैं. काले झंवर वाली पूंछ जो एड़ी तक पहुंचती है. थारपारकर का नाम भी नस्ल के प्रमुख घर

थार के मरुस्थल 8000 वर्गमील में रहने से भी है. थारपारकर को थारी, कच्छी के नाम से भी जाना जाता है.

भारत और पाकिस्तान में दूध के लिये थारपारकर नस्ल को विकसित किया गया था.

थारपारकर को सफेद या भूरा सिंधी भी कहा जाता है. गोपालक 50 से 300 की संख्या में थारपारकर को रखते हैं. थारपारकर नस्ल के बैल बहुत ही मजबूत होते हैं. विलियमसन ने 1947 में देखा कि थारपारकर पर

नागोरी,

गीर,

लाल सिंधी,

काकरेज का प्रभाव है. जब थार के मरुस्थल में अच्छी बारिश होती है तब हरी घांस भी बहुत उगती है जिसके कारण ही

गीर, नागोरी,

काकरेज भी आ जाती है.

8 इंच बारिश रेगिस्तान में होती है.

गोपालक गाय माताओं को चारे के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते रहते हैं.

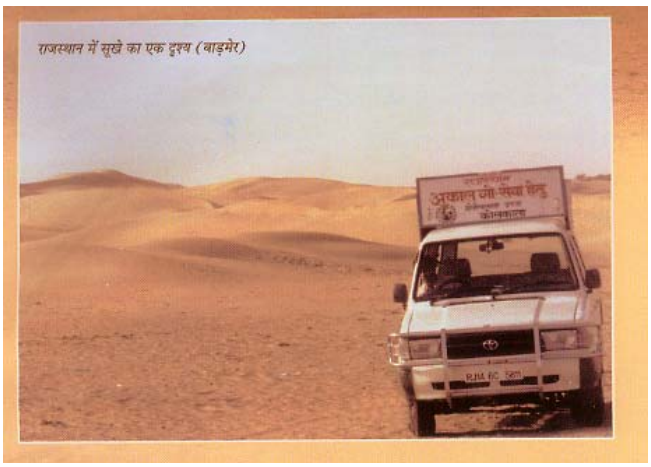

रेगिस्तान में बारिश की अनिश्चितता के कारण चारा कभी उगता है कभी नहीं उगता है.

थारपारकर नस्ल कच्छ, जोधपुर, जैसलमेर के राज्यों में तथा सिंध के दक्षिण पश्चिमी रेगिस्तान में पायी जाती है.

रेगिस्तान में हरे चारे के कम उगने के कारण ही थारपारकर गाय माताओं की खुराक कम होती है.

थारपारकर नस्ल की विपरीत परिस्थितियों में सहन करने की अपार क्षमता के कारण ही नस्ल का विस्तार काफी अधिक है.

थारपारकर नस्ल की गाय मातायें हर स्थिति में बहुत ही दुधारु होती हैं.

थारपारकर गाय माता का दूध बहुत ही अधिक गाढा और पौष्टिक होता है.

313 दिनों में 4000 लीटर से अधिक दूध देती है. 20 से 25 किलोग्राम हरा चारा, 5 से 6 किलो दाना दूधारु गो को दिया जाता है. 40 वर्गफूट बैल के लिये, 30 फूट गाय के लिये तथा 20 फीट बछडे के लिये जमीन की आवश्यकता होती है.

राजस्थान में लगातार 5 वर्षों से अकाल पडने के कारण ही

थारपारकर नस्ल बहुत बडी संख्या में भूख के कारण ही

तडप तडप कर बहुत ही तेजी के साथ दम तोड रही हैं.

राजस्थान सरकार की लापरवाही के कारण कमजोर नस्ल जीवित है.

अरब देशों के रेगिस्तान में 4 अच्छे थारपारकर सांड चाहिये थे वह नहीं मिल पाये.

थारपारकर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिये पूरे भारत में गो अनुसंधान केंद्रों में निरन्तर गहन अध्ययन अनिवार्य है.

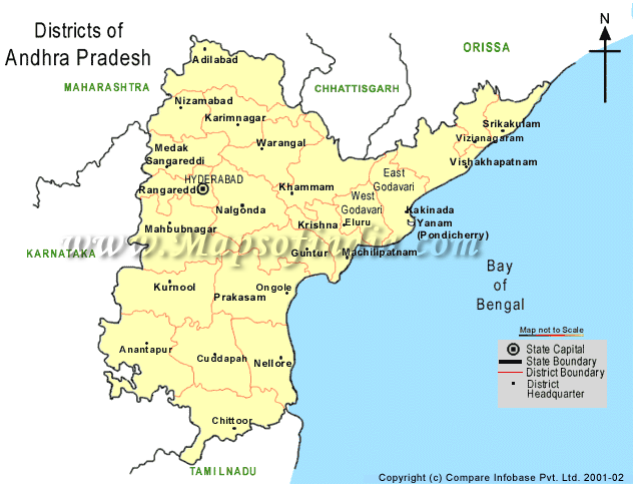

आंध्रप्रदेश में कम्पासागर, करीमनगर, ममनूर,

बिहार में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची, पूर्णिया, सयैराकेला,

हरियाणा में हिसार में सरकारी लाइवस्टोक फार्म, नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीटयूट, करनाल,

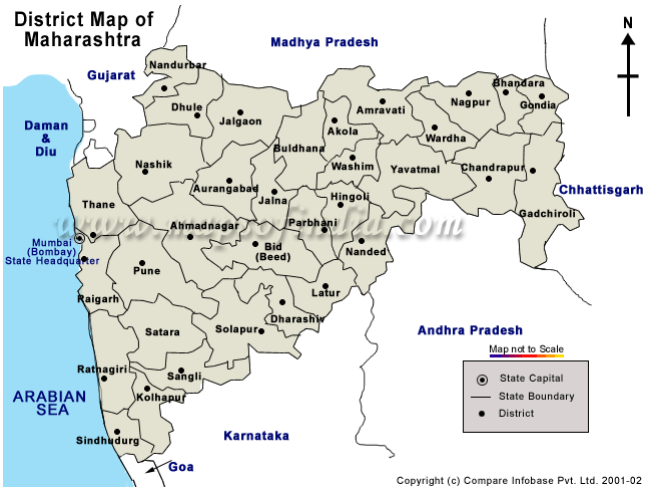

महाराष्ट्र में पोहारा, यवतमाल, राजस्थान में सेंट्रल केटल ब्रीडिंग फार्म, सूरतगढ, चंदन,

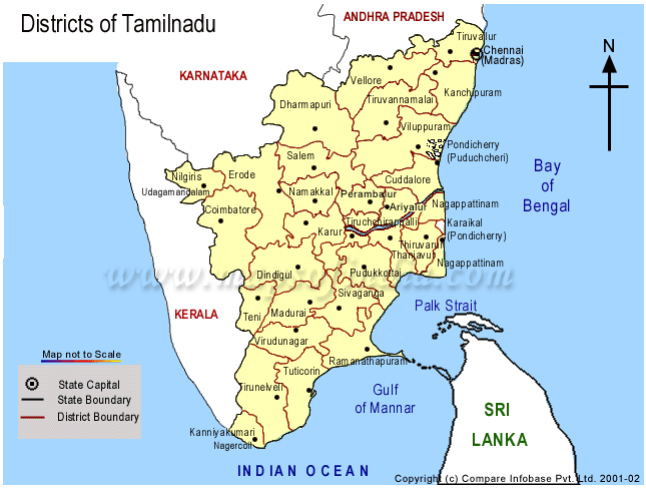

तमिलनाडू में चेतिनाड,

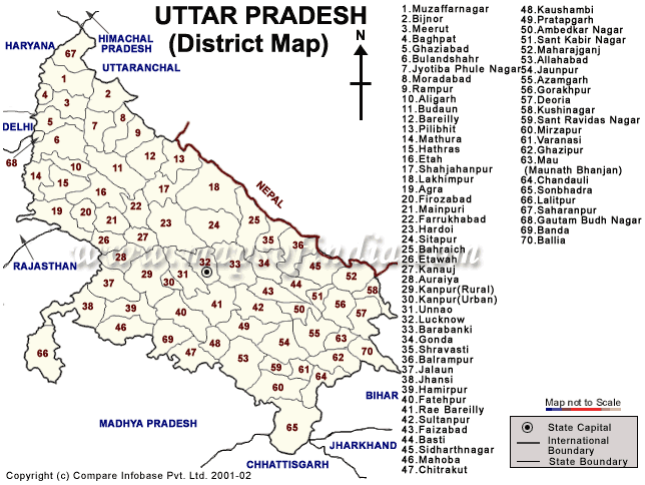

उत्तरप्रदेश में सेंट्रल केटल ब्रीडिंग फार्म, लखीमपुर, भरारी, झांसी, एक्सोटीक केटल ब्रीड में भारत सरकार थारपारकर नस्ल को सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रही है. डा. रामस्वरुप सिंह चौहान जी निदेशक केडरेड इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीटयूट इज्जतनगर बरेली उ. प्र. 243122 मो 09412288343 85 थारपारकर गोमाता तथा 7 सांड का विकास कर रही है.

राजस्थान गो सेवा संघ

राजस्थान गो सेवा संघ टोंक रोड दुर्गापुरा जयपुर 302018 सन 1954 से कामधेनु गोशाला का पंजीयन कर थारपारकर नस्ल के संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए आदर्श गोशाला के रुप में कार्य कर रही है.

राजस्थान गो सेवा संघ 13 स्थानों पर कुल 5400 थरपारकर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए कार्य कर रही है.

माधव गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र नोगांव जिला भीलवाड़ा में भी थारपारकर गोवंश का विकास किया जा रहा है.

श्री जगदंबा सेवा समिति डाकघर भद्ररायजी जिला जैसलमेर राजस्थान, इंडियन सोसायटी फोर काउ प्रोटेक्सन, बी-304, डाक्टर राजेंद्र प्रसाद कोलोनी, जैसलमेर 345001 राजस्थान, श्री चैन पब्लिक गौशाला संस्थान, फालसुंद रोड, पोखरल पिन 345201, बाबा भली करे गोसेवा संस्थान, डाकघर रामदेवरा रुणिचा, तहसील पोखरन जिला जैसलमेर राजस्थान, 345023 दूरभाष 02996-237018 कार्यालय, 238058 गोशाला, 237017 निवास, श्री गुलाब गोशाला धर्मार्थ ट्रस्ट, 14 मिल्कमेन कोलोनी, पाल लिंक रोड, बंजग्राम, डाकघर जोधपुर 342001, राष्ट्रीय अहिंसा प्रतिष्ठान, 446, पहिल सी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर 342003, श्री रुपम गोशाला, डाकघर बालासाथी, तहसील बीलादा, जोधपुर 342605, एस.पी.सी.ए. श्रद्धा, 1017, नेहरु पार्क रोड, जोधपुर 342004, ग्रामोत्थान प्रतिष्ठान, 446 महावीर स्ट्रीट, 1 सी रोड, सरदार पटेल मार्ग, सरदारपुरा, जोधपुर 342003, श्री भोपालगढ गोशाला, सीमेश्वर तालाब के पास, भोपालगढ जोधपुर 342603, सेलटर टू सफरिंगस, गणेशीलाल बिल्डींग, सोजतीगेट, जोधपुर 342001, राजस्थान गोसेवा संघ कनहेया गोशाला, पाल बालाजी के पास, पाल रोड, डाकघर पालगांव, जोधपुर 342001, श्री मरुधर केसरी जैन एवं शिवगोपाल समिति, डाकघर हरियदा, तहसील बिलादा, जिला जोधपुर 342605, श्री गुरुराज वर्धमान गोरक्षणी संस्थान, बिठारी, तहसील फलोदी, जिला जोधपुर 342301, शिवानची गेट गोशाला, नगर निगम गोडाउन के पास में, शिवांचीगेट, जोधपुर 342001, श्री फलौदी धमार्थ सेवा समिति गोशाला, गोशाला भवन, फलोदी, जिला जोधपुर 342301, श्रीनाथजी कृष्ण गोशाला, शास्त्रीघाट, पीपाड शहर, जोधपुर 342601, श्री दादा दरबार नपाली बाबा सिद्धार्थ महादेव जी.एस.एस. सेवा समिति, तखत सागर के उपर, जोधपुर 342001, श्री गोपाल कृष्ण गोशाला, डाकघर गेवडा, तहसील ओसीयान, जिला जोधपुर 342306 में थारपारकर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिये भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के सहयोग से कार्य कर रहे हैं. राजस्थान गोसेवा संघ, दुर्गापुरा, जयपुर राजस्थान पिन 302018 दूरभाष 2545954, 2551310 150 थारपारकर नस्ल को विकसित कर रहा है. कुछ वर्षो पूर्व ओमान ने 4 बैल शुद्ध थारपारकर नस्ल के भारत से खरीदने के लिये रुचि दिखाई थी.

अफसोस की बात तो यह है कि भारत से 4 शुद्ध बैल नहीं मिल सके थे. भारत में 80 प्रतिशत थारपारकर नस्ल जर्सी होलिस्टीन से क्रोस ब्रीडिंग के कारण पूरी तरह से बरबाद हो चुकी हैं.

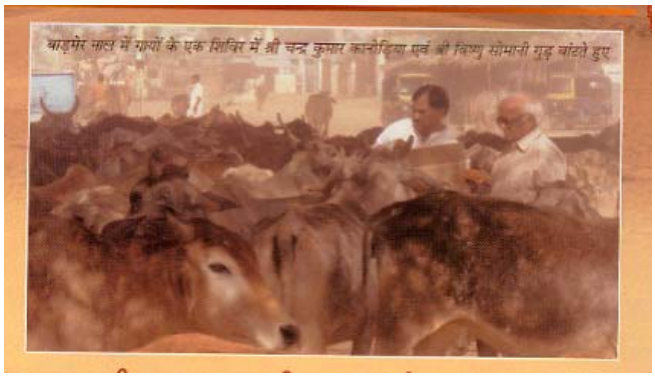

राजस्थान का सबसे बडा जैसलमेर जिला 38401 वर्ग किलोमीटर में थार मरुस्थल में फैला हुआ है.

जैसलमेर जिले में 10 से 15 प्रतिशत क्षेत्र में खेती होती है. जैसलमेर जिले का अधिकांश क्षेत्र में रेत के नीचे कडी चटटानें होने के कारण धरती जल का संचय करने में असमर्थ है. सेवान घांस यहां पर 80 प्रतिशत उगती है.

सेवान घांस थारपारकर के लिये जीवन का महत्वपूर्ण भाग है. सेवान घांस 6 से 7 वर्षों से अधिक का अकाल अपनी मजबूत जडों के कारण सहन कर लेती है. सेवान हरी घांस में प्रोटीन अधिकतम 14 प्रतिशत रहता है. सूखी घांस में 6 से 8 प्रतिशत प्रोटीन रहता है. सेवान घांस में नमी को अधिकतम खींचने की क्षमता मौजूद है. सेवान को अधिकतम उगाने के लिये कम पानी की आवश्यकता होती है. 10 साल तक सेवान घांस को संभाल कर रखना संभव है.

भारत सरकार जैसलमेर जिले में थारपारकर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिये सेवान घांस के क्षेत्र में नेशनल केटल कोलोनी बनाने के लिये योजना तैयार कर चुकी है.

नेशनल केटल कोलोनी में 1000 एकड वाली 1000 इकाइयां स्थापित करने की योजना है. नेशनल केटल कोलोनी के माध्यम से 5 लाख गायें तथा 1 लाख गोपालक परिवारों को रोजगार प्राप्त होगा.

22,16,527 एकड बेकार भूमि वर्तमान में है. जिला स्तर पर 15 सालों में 47 स्थानों पर सेवान घांस उगवाने का कार्य सफलता पूर्वक किया गया है.

सेवान घांस उगाने का कार्य यदि आधी जमीन यानी 10,00,000 एकड पर भी किया जाता है तो भारतीय गोवंश के लिये वरदान साबित होगा.

गोल्डन ग्रास योजना को मोहनगढ में एनिमल हसबेंडरी डिपार्टमेंट एवं डी.आर.डी.ए. जैसलमेर के द्वारा किया गया है.

रिजनल सेंटर ओफ सेंद्रल एरिड जोन रिसर्च इंस्टीटयूट के द्वारा भी सेवान घांस उगाने का कार्य किया गया है. 1000 एकड में 500 गायें एवं 100 परिवार रह सकते हैं.

80 प्रतिशत भूमि सेवान घांस उगाने में तथा 20 प्रतिशत भूमि गोवंश के लिये शेड, कर्मचारियों के लिये भवन, औषधी पौधे आदि के लिये उपयोग करना है. सेवान घांस का उत्पादन प्रति वर्ष एक हेक्टेयर भूमि में 4 से 5 कटाई करने पर 10 से 12 टन होता है. खेजरी वृक्ष भूमि की उत्पादकता को बढाता है. खेजरी वृक्ष सेवान घांस के साथ उगाना ज्यादा लाभदायी है. खेजरी वृक्ष से 50 किलो तक सूखा आहार एक वर्ष में प्राप्त करना संभव है.

सतारा जिले में लम्बे समय से धोंकसोंड गांव में

खिल्लार गाय के दूध को 4 लीटर से 14 लीटर तक बढाने के लिये थारपारकर नस्ल के सांडों का उपयोग किया जाता है. थारपारकर नस्ल के संपूर्ण विकास करने के लिये

मूत्र से औषधियों बनाने के लिये योजनायें,

गोबर से उर्जा,

दूध से उत्पाद तैयार करने के कार्य किये जा रहे हैं.

गोशालाओं में पंचगव्य पर अनुसंधान करने के लिये योग्य वैज्ञानिकों की आवश्यकता है. भारत सरकार भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के माध्यम से 5 लाख रुपयों की सहायता गोशालाओं को पंचगव्य पर अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिये दे रही है.

भारत की गोशालाओं को थारपारकर नस्ल के संपूर्ण विकास करने के लिये योजनाबद्ध तरीके से सामने आना आवश्यक है जिससे भारत में

सोने के सिक्के एक बार फिर से चल सकेंगे.